

# बी0एड0 प्रशिक्षुओं के मानसिक स्वास्थ्य, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 नीलम<sup>1</sup>, सुजल पाल<sup>2</sup>

<sup>1</sup>शोध निर्देशिका, असिस्टेंट प्रोफेसर, बी0एड0 विभाग, का0सु0 साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय अयोध्या (उ0प्र0)

<sup>2</sup>शोधकर्ता, बी0एड0 विभाग, का0सु0 साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय अयोध्या (उ0प्र0)

## सार:

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य बी0एड0 प्रशिक्षुओं के मानसिक स्वास्थ्य, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना है। शिक्षक निर्माण की प्रक्रिया में इन तीनों आयामों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि एक स्वस्थ मानसिक अवस्था वाला प्रशिक्षु न केवल प्रभावी ढंग से अधिगम करता है, बल्कि नवीन विचारों का सृजन करने तथा उत्कृष्ट शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने में भी अधिक सक्षम होता है। वर्तमान समय में शिक्षक शिक्षा के समक्ष बदलती सामाजिक, शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक परिस्थितियाँ नई चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रही हैं, जिनके कारण प्रशिक्षुओं के मानसिक स्वास्थ्य, सृजनात्मक अभिव्यक्ति तथा अध्ययन उपलब्धि पर विविध प्रकार के प्रभाव पड़ रहे हैं। इस अध्ययन में विभिन्न आधारों, जैसे लिंग, निवासीय पृष्ठभूमि तथा संकाय के अनुसार बी0एड0 प्रशिक्षुओं के मानसिक स्वास्थ्य, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में उपयुक्त शोध पद्धति का चयन करते हुए मानकीकृत माप उपकरणों तथा उपलब्ध शैक्षिक अभिलेखों के माध्यम से आँकड़ों का संकलन किया गया तथा उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों द्वारा उनका विश्लेषण एवं व्याख्या की गई। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि मानसिक स्वास्थ्य, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तिगत तथा सामाजिक कारकों का प्रभाव परिलक्षित होता है तथा इन तीनों के मध्य सार्थक संबंध भी विद्यमान है। जिन प्रशिक्षुओं का मानसिक स्वास्थ्य संतुलित एवं सकारात्मक पाया गया, उनमें सृजनात्मकता का स्तर अपेक्षाकृत अधिक तथा शैक्षिक उपलब्धि भी बेहतर प्राप्त हुई। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षक शिक्षा संस्थानों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन, सृजनात्मक चिंतन के विकास और गुणवत्तापूर्ण अधिगम वातावरण के निर्माण हेतु प्रभावी योजनाएँ विकसित करने में सहायक होंगे। साथ ही यह शोध भविष्य के अनुसंधानों के लिए भी एक सुदृढ़ आधार प्रस्तुत करता है तथा शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण दिशानिर्देश प्रदान करता है।

**कुंजी शब्द:-** मानसिक स्वास्थ्य, सृजनात्मकता, शैक्षिक उपलब्धि, बी0एड0 प्रशिक्षु, तुलनात्मक अध्ययन,

## प्रस्तावना :

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा नैतिक विकास का मूल आधार है। यह केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं है, बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की सतत प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से उसकी बौद्धिक, भावात्मक, सामाजिक, नैतिक तथा व्यवहारिक क्षमताओं का विकास होता है। किसी भी शिक्षा व्यवस्था की सफलता उसके शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है और एक उत्कृष्ट शिक्षक का निर्माण प्रभावी शिक्षक शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। शिक्षक केवल पाठ्यवस्तु का संप्रेषण करने वाला व्यक्ति नहीं होता, बल्कि वह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, मूल्य विकास, सामाजिक चेतना तथा राष्ट्र निर्माण का प्रमुख आधार होता है। इसलिए शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों का उद्देश्य ऐसे शिक्षकों का निर्माण करना है, जो ज्ञानवान होने के साथ-साथ मानसिक रूप से स्वस्थ, सृजनशील, संवेदनशील, उत्तरदायी तथा सामाजिक मूल्यों से युक्त हों। बी0एड0 प्रशिक्षण शिक्षक निर्माण की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण चरण है। इस प्रशिक्षण के माध्यम से भावी शिक्षकों को शिक्षण कौशल, शैक्षिक सिद्धांतों, अधिगम प्रक्रियाओं, मूल्यांकन तकनीकों तथा व्यावसायिक

दक्षताओं से परिचित कराया जाता है। साथ ही उनमें नेतृत्व क्षमता, निर्णय क्षमता, समस्या समाधान, संप्रेषण कौशल तथा सृजनात्मक चिंतन का विकास भी किया जाता है। वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप अत्यधिक परिवर्तनशील हो चुका है। ज्ञान के निरंतर विस्तार, सामाजिक परिवर्तन, वैज्ञानिक प्रगति तथा बदलती शैक्षिक आवश्यकताओं ने शिक्षक की भूमिका को पहले की अपेक्षा अधिक व्यापक और उत्तरदायित्वपूर्ण बना दिया है। ऐसी परिस्थितियों में केवल विषय ज्ञान पर्याप्त नहीं है, बल्कि शिक्षक का मानसिक स्वास्थ्य, उसकी सृजनात्मक क्षमता तथा शैक्षिक दक्षता भी समान रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है।

मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का आधारभूत पक्ष है। यह केवल मानसिक रोगों की अनुपस्थिति का नाम नहीं है, बल्कि ऐसी सकारात्मक मानसिक अवस्था है जिसमें व्यक्ति स्वयं को संतुलित, आत्मविश्वासी, संतुष्ट, उत्तरदायी तथा परिस्थितियों के अनुरूप समायोजित रखने में सक्षम होता है। मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखता है, तनावपूर्ण परिस्थितियों का धैर्यपूर्वक सामना करता है, सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाता है तथा सामाजिक संबंधों का सफलतापूर्वक निर्वहन करता है। शिक्षक के संदर्भ में मानसिक स्वास्थ्य का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि उसका व्यवहार, व्यक्तित्व तथा कार्यशैली सीधे विद्यार्थियों के अधिगम, अनुशासन, प्रेरणा तथा व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करती है। यदि शिक्षक मानसिक रूप से स्वस्थ होगा तो वह कक्षा में सकारात्मक वातावरण निर्मित करेगा, विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझेगा तथा प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का संचालन कर सकेगा। बी०एड० प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षु अनेक प्रकार की शैक्षिक, सामाजिक तथा व्यक्तिगत चुनौतियों का सामना करते हैं। प्रशिक्षण के दौरान उन्हें शिक्षण अभ्यास, पाठ योजना निर्माण, परियोजना कार्य, संगोष्ठियों में सहभागिता, मूल्यांकन संबंधी कार्य तथा व्यावसायिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त प्रतियोगी वातावरण, भविष्य की रोजगार संबंधी चिंताएँ, पारिवारिक अपेक्षाएँ तथा सामाजिक दबाव भी उनके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। यदि इन परिस्थितियों का उचित प्रबंधन न हो तो प्रशिक्षुओं में तनाव, चिंता, असंतोष तथा आत्मविश्वास की कमी उत्पन्न हो सकती है, जिसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि तथा व्यावसायिक दक्षता पर पड़ता है। इसलिए शिक्षक शिक्षा संस्थानों का यह दायित्व है कि वे प्रशिक्षुओं के मानसिक स्वास्थ्य के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु अनुकूल शैक्षिक वातावरण उपलब्ध कराएँ।

सृजनात्मकता मानव व्यक्तित्व की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। यह व्यक्ति की नवीन, मौलिक, उपयोगी तथा प्रभावशाली विचार उत्पन्न करने की क्षमता का परिचायक है। सृजनात्मक व्यक्ति समस्याओं को नए दृष्टिकोण से देखता है, उनके समाधान के लिए नवीन उपाय खोजता है तथा परिस्थितियों के अनुरूप नवीन प्रयोग करने का साहस रखता है। शिक्षा के क्षेत्र में सृजनात्मकता का महत्व अत्यधिक है क्योंकि वर्तमान समय में रटने पर आधारित शिक्षा के स्थान पर चिंतन, विश्लेषण, नवाचार तथा समस्या समाधान आधारित शिक्षा को अधिक महत्व दिया जा रहा है। ऐसे में शिक्षक की सृजनात्मकता ही कक्षा शिक्षण को प्रभावी, रोचक तथा विद्यार्थी-केंद्रित बनाती है। बी०एड० प्रशिक्षुओं में सृजनात्मकता का विकास शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम का एक प्रमुख उद्देश्य है। प्रशिक्षण के दौरान यदि प्रशिक्षुओं को स्वतंत्र चिंतन, नवीन प्रयोग, शिक्षण सामग्री निर्माण, समस्या समाधान तथा नवाचार के पर्याप्त अवसर प्राप्त होते हैं तो उनमें सृजनात्मकता का विकास होता है। सृजनात्मक प्रशिक्षु नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग करता है, विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नताओं को समझता है तथा शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावशाली बनाता है। इसके विपरीत यदि प्रशिक्षण केवल परीक्षा एवं औपचारिकताओं तक सीमित रह जाए तो प्रशिक्षुओं की मौलिकता एवं नवाचार की क्षमता प्रभावित हो सकती है। इसलिए शिक्षक शिक्षा संस्थानों में ऐसा वातावरण विकसित करना आवश्यक है जो स्वतंत्र चिंतन, रचनात्मक अभिव्यक्ति तथा प्रयोगशीलता को प्रोत्साहित करे।

शैक्षिक उपलब्धि शिक्षा की प्रभावशीलता का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। यह किसी विद्यार्थी द्वारा अध्ययन के पश्चात प्राप्त ज्ञान, कौशल, समझ तथा उपलब्धियों का माप है। सामान्यतः परीक्षा परिणाम, आंतरिक मूल्यांकन, व्यावहारिक कार्य, परियोजना तथा अन्य शैक्षिक उपलब्धियों के माध्यम से इसका मूल्यांकन किया जाता है। बी०एड० प्रशिक्षुओं की शैक्षिक उपलब्धि केवल उनकी अध्ययन क्षमता का द्योतक नहीं होती, बल्कि यह उनके व्यावसायिक विकास, शिक्षण दक्षता तथा भविष्य के शिक्षक के रूप में उनकी सफलता का भी संकेत देती है। उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले प्रशिक्षु सामान्यतः अधिक आत्मविश्वासी, उत्तरदायी तथा प्रभावी शिक्षक बनने की संभावना रखते हैं। मानसिक स्वास्थ्य, सृजनात्मकता तथा शैक्षिक उपलब्धि तीनों परस्पर संबंधित आयाम हैं। मानसिक रूप से स्वस्थ प्रशिक्षु अधिक एकाग्रचित्त होकर अध्ययन करता है, नवीन विचारों को ग्रहण करने में सक्षम होता है तथा उसकी सृजनात्मक अभिव्यक्ति अधिक प्रभावशाली होती है। इसी प्रकार सृजनात्मकता अध्ययन में रुचि, समस्या समाधान क्षमता तथा नवाचारी दृष्टिकोण को विकसित करती है, जिससे

शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होती है। दूसरी ओर शैक्षिक सफलता प्रशिक्षुओं में आत्मविश्वास, संतोष तथा सकारात्मक मानसिकता का विकास करती है। इस प्रकार ये तीनों आयाम एक-दूसरे को प्रभावित करते हुए शिक्षक के समग्र व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, प्रशिक्षु-केंद्रित अधिगम, समावेशी शिक्षा, नवाचार, अनुसंधान, आलोचनात्मक चिंतन तथा समग्र व्यक्तित्व विकास पर विशेष बल दिया है। इस नीति के अनुसार शिक्षक केवल ज्ञान प्रदाता नहीं, बल्कि अधिगम का सहायक, मार्गदर्शक, प्रेरक तथा नवाचार का संवाहक होना चाहिए। इस उद्देश्य की प्राप्ति तभी संभव है जब शिक्षक मानसिक रूप से स्वस्थ, सृजनात्मक तथा शैक्षिक रूप से दक्ष हो। इसलिए बी०एड० प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन, सृजनात्मक गतिविधियों तथा गुणवत्तापूर्ण अधिगम वातावरण को विशेष महत्व दिया जाना आवश्यक है।

समाज में तीव्र परिवर्तन, तकनीकी प्रगति, प्रतिस्पर्धा, रोजगार संबंधी अनिश्चितता तथा बदलती जीवन शैली के कारण युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर अनेक प्रकार के प्रभाव पड़ रहे हैं। बी०एड० प्रशिक्षु भी इससे अछूते नहीं हैं। बढ़ते तनाव, समय प्रबंधन की समस्याएँ, शैक्षिक दबाव तथा सामाजिक अपेक्षाएँ उनके मानसिक संतुलन को प्रभावित करती हैं। दूसरी ओर आधुनिक शिक्षा व्यवस्था सृजनात्मक, नवाचारी तथा बहुआयामी व्यक्तित्व वाले शिक्षकों की अपेक्षा करती है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षक शिक्षा संस्थानों में मानसिक स्वास्थ्य तथा सृजनात्मकता दोनों के विकास पर समान रूप से ध्यान दिया जाए, जिससे प्रशिक्षुओं की शैक्षिक उपलब्धि में भी अपेक्षित सुधार हो सके। तुलनात्मक अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न समूहों के मध्य समानताओं एवं भिन्नताओं का वैज्ञानिक विश्लेषण करना होता है। बी०एड० प्रशिक्षुओं के मानसिक स्वास्थ्य, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का लिंग, निवासीय पृष्ठभूमि, संकाय अथवा अन्य प्रासंगिक आधारों पर तुलनात्मक अध्ययन करने से यह ज्ञात किया जा सकता है कि किन कारकों का इन आयामों पर अधिक प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार के अध्ययन से शिक्षक शिक्षा संस्थानों को प्रशिक्षण कार्यक्रमों में आवश्यक सुधार करने तथा प्रशिक्षुओं की आवश्यकताओं के अनुरूप योजनाएँ बनाने में सहायता प्राप्त होती है।

प्रस्तुत अध्ययन इसी आवश्यकता की पूर्ति की दिशा में एक सार्थक प्रयास है। इस अध्ययन में बी०एड० प्रशिक्षुओं के मानसिक स्वास्थ्य, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए यह जानने का प्रयास किया गया है कि विभिन्न वर्गों के प्रशिक्षुओं में इन आयामों की स्थिति किस प्रकार भिन्न है तथा इनके मध्य किस प्रकार का संबंध विद्यमान है। अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षक शिक्षा संस्थानों, शिक्षक शिक्षकों, शिक्षा नीति निर्माताओं, शोधार्थियों तथा शिक्षा प्रशासन से जुड़े व्यक्तियों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे। इसके आधार पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन, सृजनात्मक गतिविधियों के विस्तार, परामर्श सेवाओं के विकास तथा गुणवत्तापूर्ण अधिगम वातावरण के निर्माण के लिए प्रभावी योजनाएँ तैयार की जा सकती हैं। **मनोज कुमार, वसीम अहमद एवं नाजली (2020)** ने बी०एड० सामान्य एवं विशेष शिक्षा के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता तथा शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में 300 बी०एड० विद्यार्थियों को शामिल किया गया। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि भावनात्मक रूप से अधिक परिपक्व विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भी बेहतर थी। सामान्य बी०एड० विद्यार्थियों का स्तर विशेष शिक्षा के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पाया गया, जबकि लिंग के आधार पर कोई सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ। **राजेन्द्रन एवं आनंदरासु (2021)** ने 941 बी०एड० प्रशिक्षुओं पर वैज्ञानिक अभिवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि औसत से अधिक थी। महिला प्रशिक्षुओं तथा शहरी पृष्ठभूमि के प्रशिक्षुओं का प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर पाया गया तथा वैज्ञानिक अभिवृत्ति और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ। **शरथ कुमार एवं प्रवीणा (2023)** ने बी०एड० प्रशिक्षुओं में सृजनात्मक शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया। 100 प्रशिक्षुओं पर किए गए इस अध्ययन में पाया गया कि अध्ययन वर्ष तथा संकाय के आधार पर सृजनात्मक शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर था, जबकि लिंग के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। शोधकर्ताओं ने शिक्षक शिक्षा में सृजनात्मकता के विकास पर विशेष बल दिया। **शशप्रा चक्रवर्ती एवं प्रतिमा पल्लई (2024)** ने बी०एड० विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उल्टे कक्षा-कक्ष शिक्षण पद्धति के प्रभाव का अध्ययन किया। शोध के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि नवीन शिक्षण पद्धति अपनाने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में उल्लेखनीय वृद्धि हुई तथा विद्यार्थियों ने इस पद्धति के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्त किया। **राजीव कुमार झा एवं नाहिद बी (2025)** ने शिक्षक प्रशिक्षुओं के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश प्रशिक्षुओं का मानसिक स्वास्थ्य औसत से उच्च स्तर का

था। लिंग तथा शैक्षिक पृष्ठभूमि के आधार पर मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। शोधकर्ताओं ने शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन कार्यक्रमों की आवश्यकता पर बल दिया।

**शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :-** शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास की आधारशिला है तथा शिक्षक उस शिक्षा व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण घटक होता है। एक योग्य, संवेदनशील, सृजनशील एवं मानसिक रूप से स्वस्थ शिक्षक ही विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में प्रभावी भूमिका निभा सकता है। इसलिए शिक्षक निर्माण की प्रक्रिया को सुदृढ़ एवं गुणवत्तापूर्ण बनाना समय की प्रमुख आवश्यकता है। बी०एड० प्रशिक्षण इसी उद्देश्य की पूर्ति का एक महत्वपूर्ण माध्यम है, जिसके द्वारा भावी शिक्षकों को ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति तथा व्यावसायिक दक्षताओं से युक्त बनाया जाता है। वर्तमान समय में शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्यों तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं में तीव्र परिवर्तन हो रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में केवल विषय ज्ञान पर्याप्त नहीं रह गया है, बल्कि शिक्षक का मानसिक स्वास्थ्य, सृजनात्मकता तथा शैक्षिक दक्षता भी समान रूप से आवश्यक हो गई है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन बी०एड० प्रशिक्षुओं के मानसिक स्वास्थ्य, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण है।

मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व का आधार है। मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति आत्मविश्वासी, संतुलित, उत्तरदायी तथा सामाजिक रूप से समायोजित होता है। वह तनावपूर्ण परिस्थितियों में भी उचित निर्णय लेने, समस्याओं का समाधान करने तथा सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने में सक्षम होता है। शिक्षक के संदर्भ में मानसिक स्वास्थ्य का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि शिक्षक का व्यवहार, व्यक्तित्व, कार्यशैली तथा भावनात्मक संतुलन विद्यार्थियों पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है। यदि शिक्षक स्वयं मानसिक रूप से स्वस्थ होगा तो वह विद्यार्थियों के साथ सकारात्मक संबंध स्थापित करेगा, शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाएगा तथा विद्यालय में स्वस्थ शैक्षिक वातावरण का निर्माण करेगा। इसके विपरीत मानसिक तनाव, असंतुलन अथवा निराशा से ग्रस्त शिक्षक अपने उत्तरदायित्वों का प्रभावी निर्वहन नहीं कर सकता। इसलिए बी०एड० प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षुओं के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान समय में बी०एड० प्रशिक्षु अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। प्रशिक्षण की शैक्षणिक आवश्यकताएँ, शिक्षण-अभ्यास, परियोजना कार्य, परीक्षा, प्रतियोगी वातावरण, भविष्य में रोजगार की चिंता, पारिवारिक अपेक्षाएँ तथा सामाजिक दबाव उनके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। कई बार ये परिस्थितियाँ तनाव, चिंता, आत्मविश्वास की कमी तथा असंतोष जैसी समस्याओं को जन्म देती हैं, जिससे उनकी अध्ययन क्षमता एवं शैक्षिक प्रदर्शन प्रभावित होता है। यदि इन समस्याओं की समय रहते पहचान कर उनका समाधान किया जाए तो प्रशिक्षुओं के मानसिक स्वास्थ्य में सुधार लाया जा सकता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन इस दिशा में उपयोगी जानकारी प्रदान करेगा।

सृजनात्मकता शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था केवल तथ्यों के संग्रह तक सीमित नहीं है, बल्कि वह विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में नवीन चिंतन, समस्या समाधान, विश्लेषणात्मक क्षमता तथा नवाचार का विकास करना चाहती है। एक सृजनात्मक शिक्षक अपने शिक्षण को रोचक, प्रभावी तथा विद्यार्थी-केंद्रित बनाता है। वह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में नवीन विधियों, गतिविधियों तथा शिक्षण-सामग्री का प्रयोग करता है, जिससे विद्यार्थियों की सीखने में रुचि बढ़ती है। इसलिए बी०एड० प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य केवल शिक्षण कौशल विकसित करना नहीं, बल्कि प्रशिक्षुओं में सृजनात्मक दृष्टिकोण विकसित करना भी है। सृजनात्मकता केवल कला या साहित्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यक है। एक सृजनात्मक शिक्षक नई परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढाल सकता है, शिक्षण संबंधी समस्याओं के नवीन समाधान प्रस्तुत कर सकता है तथा विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण की योजना बना सकता है। वर्तमान समय में समावेशी शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, परियोजना आधारित शिक्षण तथा सक्रिय अधिगम जैसी अवधारणाओं के सफल क्रियान्वयन के लिए सृजनात्मक शिक्षक की आवश्यकता पहले से अधिक बढ़ गई है। इसलिए बी०एड० प्रशिक्षुओं में सृजनात्मकता का स्तर ज्ञात करना तथा विभिन्न आधारों पर उसका तुलनात्मक अध्ययन करना आवश्यक है।

शैक्षिक उपलब्धि किसी भी विद्यार्थी के अध्ययन स्तर, अधिगम क्षमता तथा शैक्षणिक सफलता का प्रमुख संकेतक है। बी०एड० प्रशिक्षुओं की शैक्षिक उपलब्धि उनके विषय ज्ञान, शिक्षण कौशल तथा व्यावसायिक तैयारी का भी द्योतक होती है। उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले प्रशिक्षु भविष्य में प्रभावी शिक्षक बनने की अधिक संभावना रखते हैं। इसलिए यह जानना आवश्यक है कि किन कारकों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक अथवा नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यदि मानसिक स्वास्थ्य एवं सृजनात्मकता का शैक्षिक उपलब्धि से घनिष्ठ संबंध पाया जाता है, तो शिक्षक शिक्षा संस्थानों में इन दोनों आयामों के विकास हेतु विशेष कार्यक्रम संचालित किए जा सकते हैं। प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता इसलिए

भी अनुभव की जाती है क्योंकि वर्तमान समय में शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में शिक्षक शिक्षा को अधिक व्यावहारिक, नवाचारी, अनुसंधान-आधारित तथा विद्यार्थी-केंद्रित बनाने पर विशेष ध्यान दिया गया है। इस नीति के अनुसार शिक्षक में आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता, नेतृत्व क्षमता, भावनात्मक परिपक्वता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास आवश्यक है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति तभी संभव है जब शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मानसिक स्वास्थ्य एवं सृजनात्मकता जैसे मनोवैज्ञानिक आयामों को पर्याप्त महत्व दिया जाए। प्रस्तुत अध्ययन इस दिशा में उपयोगी तथ्य उपलब्ध कराएगा।

अध्ययन की आवश्यकता का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि विभिन्न शोधों में मानसिक स्वास्थ्य, सृजनात्मकता तथा शैक्षिक उपलब्धि पर पृथक-पृथक अध्ययन तो पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं, परंतु बी०एड० प्रशिक्षुओं के संदर्भ में इन तीनों चरों का एक साथ तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत कम किया गया है। विशेष रूप से लिंग, निवासीय पृष्ठभूमि, संकाय अथवा अन्य सामाजिक-शैक्षिक आधारों पर इनका तुलनात्मक विश्लेषण सीमित रूप में उपलब्ध है। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन इस शोध-अंतराल की पूर्ति करने का प्रयास करेगा तथा शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में नवीन ज्ञान का संवर्धन करेगा। यह अध्ययन शिक्षक शिक्षा संस्थानों के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन, परामर्श सेवाओं, तनाव प्रबंधन, सृजनात्मक गतिविधियों, कार्यशालाओं तथा नवाचार आधारित शिक्षण कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी बनाया जा सकेगा। इससे प्रशिक्षुओं का समग्र विकास होगा तथा वे भविष्य में अधिक सक्षम, उत्तरदायी एवं प्रभावशाली शिक्षक बन सकेंगे। प्रस्तुत अध्ययन का महत्व शोधार्थियों के लिए भी विशेष है। यह अध्ययन भविष्य में मानसिक स्वास्थ्य, सृजनात्मकता, शैक्षिक उपलब्धि, व्यक्तित्व, आत्मविश्वास, व्यावसायिक दक्षता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता तथा अन्य मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक चरों पर किए जाने वाले अनुसंधानों के लिए आधार सामग्री उपलब्ध कराएगा। साथ ही यह अध्ययन शोधकर्ताओं को नवीन अनुसंधान क्षेत्रों की पहचान करने तथा शिक्षक शिक्षा से संबंधित समस्याओं पर आगे शोध करने की प्रेरणा प्रदान करेगा। प्रशासनिक एवं नीतिगत दृष्टि से भी यह अध्ययन महत्वपूर्ण है। शिक्षा विभाग, विश्वविद्यालय, शिक्षक शिक्षा संस्थान तथा नीति निर्माता अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर ऐसी योजनाएँ बना सकते हैं जिनसे प्रशिक्षुओं के मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ किया जा सके, सृजनात्मक गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा सके तथा शैक्षिक उपलब्धि में सुधार लाया जा सके। इससे शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि होगी तथा विद्यालयों को अधिक दक्ष एवं संवेदनशील शिक्षक प्राप्त होंगे।

सामाजिक दृष्टि से भी प्रस्तुत अध्ययन का विशेष महत्व है। शिक्षक समाज का मार्गदर्शक होता है तथा उसके विचार, व्यवहार एवं व्यक्तित्व का प्रभाव विद्यार्थियों के साथ-साथ व्यापक समाज पर भी पड़ता है। यदि शिक्षक मानसिक रूप से स्वस्थ, सृजनशील तथा ज्ञानवान होगा तो वह विद्यार्थियों में सकारात्मक जीवन मूल्यों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा राष्ट्रीय चेतना का विकास कर सकेगा। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन का महत्व केवल शिक्षक शिक्षा तक सीमित न होकर समाज एवं राष्ट्र के समग्र विकास से भी जुड़ा हुआ है। बी०एड० प्रशिक्षुओं के मानसिक स्वास्थ्य, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में अत्यंत आवश्यक एवं सार्थक है। यह अध्ययन न केवल प्रशिक्षुओं की वास्तविक स्थिति का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करेगा, बल्कि शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में आवश्यक सुधार, मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन, सृजनात्मकता के विकास तथा शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि हेतु उपयोगी सुझाव भी प्रदान करेगा। इसके निष्कर्ष शिक्षक शिक्षा संस्थानों, शिक्षकों, शोधार्थियों, शिक्षा प्रशासकों एवं नीति निर्माताओं के लिए समान रूप से लाभकारी सिद्ध होंगे तथा भविष्य में गुणवत्तापूर्ण शिक्षक निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

**शोध समस्या कथन :-** बी०एड० प्रशिक्षुओं के मानसिक स्वास्थ्य, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण :-

**बी०एड० प्रशिक्षु** बी०एड० प्रशिक्षु वे विद्यार्थी होते हैं जो शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत शिक्षण व्यवसाय के लिए प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे होते हैं। उन्हें विषय ज्ञान, शिक्षण कौशल, मूल्यांकन, कक्षा प्रबंधन तथा व्यावसायिक दक्षताओं का प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि वे भविष्य में प्रभावी, उत्तरदायी एवं योग्य शिक्षक बन सकें।

**मानसिक स्वास्थ्य** मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति की वह सकारात्मक मानसिक अवस्था है जिसमें वह स्वयं के साथ संतुलित रहता है, तनाव का सफलतापूर्वक सामना करता है, उचित निर्णय लेने में सक्षम होता है तथा सामाजिक एवं व्यावसायिक उत्तरदायित्वों का प्रभावी निर्वहन करता है। यह व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण आधार है।

**सृजनात्मकता** सृजनात्मकता व्यक्ति की नवीन, मौलिक एवं उपयोगी विचार उत्पन्न करने की क्षमता है। यह समस्या समाधान, कल्पनाशक्ति, नवाचार तथा स्वतंत्र चिंतन को प्रोत्साहित करती है। शिक्षा के क्षेत्र में सृजनात्मकता प्रभावी शिक्षण, नवीन विधियों के प्रयोग तथा विद्यार्थियों में रचनात्मक सोच के विकास का आधार मानी जाती है।

**शैक्षिक उपलब्धि** शैक्षिक उपलब्धि से आशय विद्यार्थी द्वारा अध्ययन के पश्चात प्राप्त ज्ञान, कौशल, दक्षता एवं परीक्षा परिणाम से है। यह उसके अधिगम स्तर, अध्ययन क्षमता तथा शैक्षणिक सफलता का प्रमुख संकेतक है और सामान्यतः परीक्षा, आंतरिक मूल्यांकन तथा व्यवहारिक कार्यों के आधार पर मापी जाती है।

**शोध अध्ययन के उद्देश्य :-** प्रस्तावित शोध कार्य हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों को निर्धारित किया गया।

1. वित्तपोषित बी०एड० प्रशिक्षुओं का सृजनात्मकता का अध्ययन करना
2. स्ववित्तपोषित बी०एड० प्रशिक्षुओं का मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना

**शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ :-** प्रस्तुत शोध पत्र में शोध अध्ययन को संपादित करने हेतु निम्नांकित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया।

1. वित्तपोषित बी०एड० प्रशिक्षुओं का सृजनात्मकता सामान्य है।
2. स्ववित्तपोषित बी०एड० प्रशिक्षुओं का मानसिक स्वास्थ्य सामान्य है।

**शोध अध्ययन विधि :-** प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए “वर्णनात्मक अनुसंधान” का एक प्रकार आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करना उचित होगा इसलिए शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग प्रस्तुत शोध अध्ययन में किया गया है।

**शोध अध्ययन की जनसंख्या एवं न्यादर्श :-** प्रस्तुत शोध अध्ययन में “अयोध्या जनपद” के बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है। अध्ययन को अयोध्या जनपद तक सीमित रखा गया है। इस अध्ययन हेतु “400 बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों” का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। चयनित न्यादर्श में विभिन्न महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों को समुचित प्रतिनिधित्व प्रदान करते हुए अध्ययन की आवश्यकताओं के अनुरूप सम्मिलित किया गया है, ताकि प्राप्त निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय, वस्तुनिष्ठ एवं प्रतिनिधिक हों।

**शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :-** प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने मानसिक स्वास्थ्य के लिए प्रमोद कुमार तथा सृजनात्मकता के लिए बकार मेंहदी एवं शैक्षिक उपलब्धि के लिए वी० वी० माल्या के उपकरण का प्रयोग किया है।

**अध्ययन का परिसीमांकन :-** प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल आयोध्या जिले के प्रशिक्षण संस्थानों को जनसंख्या के रूप में चयन किया गया है।

**आंकड़ों का विप्लेषण एवं व्याख्या :-**

**परिकल्पना 1** वित्तपोषित बी०एड० प्रशिक्षुओं का सृजनात्मकता सामान्य है।

### तालिका 1 :

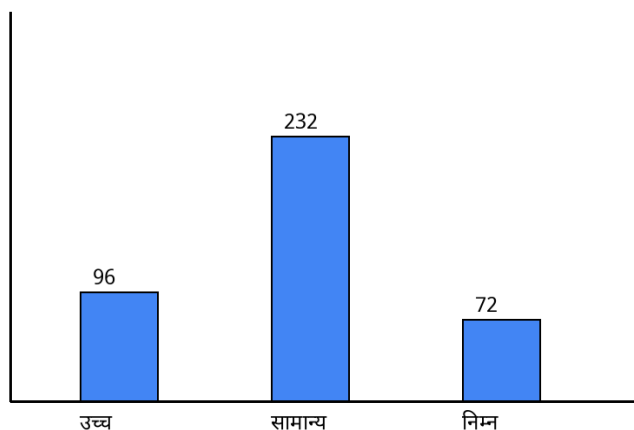
#### सृजनात्मकता स्तर का वितरण

| श्रेणी  | आवृत्ति | प्रतिशत | संचयी : | व्याख्या          |
|---------|---------|---------|---------|-------------------|
| उच्च    | 96      | 24.0    | 24.0    | उच्च सृजनात्मकता  |
| सामान्य | 232     | 58.0    | 82.0    | अधिकांश प्रशिक्षु |
| निम्न   | 72      | 18.0    | 100.0   | कम संख्या         |

**व्याख्या :**

तालिका 1 के अनुसार कुल 400 वित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षुओं में 232 (58%) प्रशिक्षु सामान्य सृजनात्मकता श्रेणी में पाए गए, जबकि 96 (24%) उच्च तथा 72 (18%) निम्न श्रेणी में रहे। इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता सामान्य स्तर की है। यह परिणाम प्रस्तुत परिकल्पना का समर्थन करता है।

तालिका 1 : सृजनात्मकता स्तर

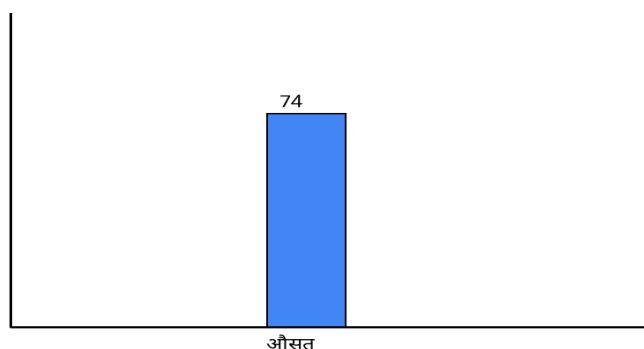
**तालिका 2 :****सृजनात्मकता स्कोर का वर्णनात्मक विश्लेषण**

| समूह                        | N   | माध्य | माध्यिका | बहुलक | SD   | निष्कर्ष     |
|-----------------------------|-----|-------|----------|-------|------|--------------|
| वित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षु | 400 | 74.28 | 74.00    | 75.00 | 8.14 | सामान्य स्तर |

**व्याख्या :**

तालिका 2 से ज्ञात होता है कि प्रशिक्षुओं का औसत सृजनात्मकता स्कोर 74.28 है। माध्य, माध्यिका एवं बहुलक के मान एक-दूसरे के निकट हैं तथा मानक विचलन 8.14 है, जो समूह में संतुलित वितरण को दर्शाता है। अतः अधिकांश प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता सामान्य पाई गई।

तालिका 2 : औसत सृजनात्मकता स्कोर



## 2. स्ववित्तपोषित बी०एड० प्रशिक्षुओं का मानसिक स्वास्थ्य सामान्य है।

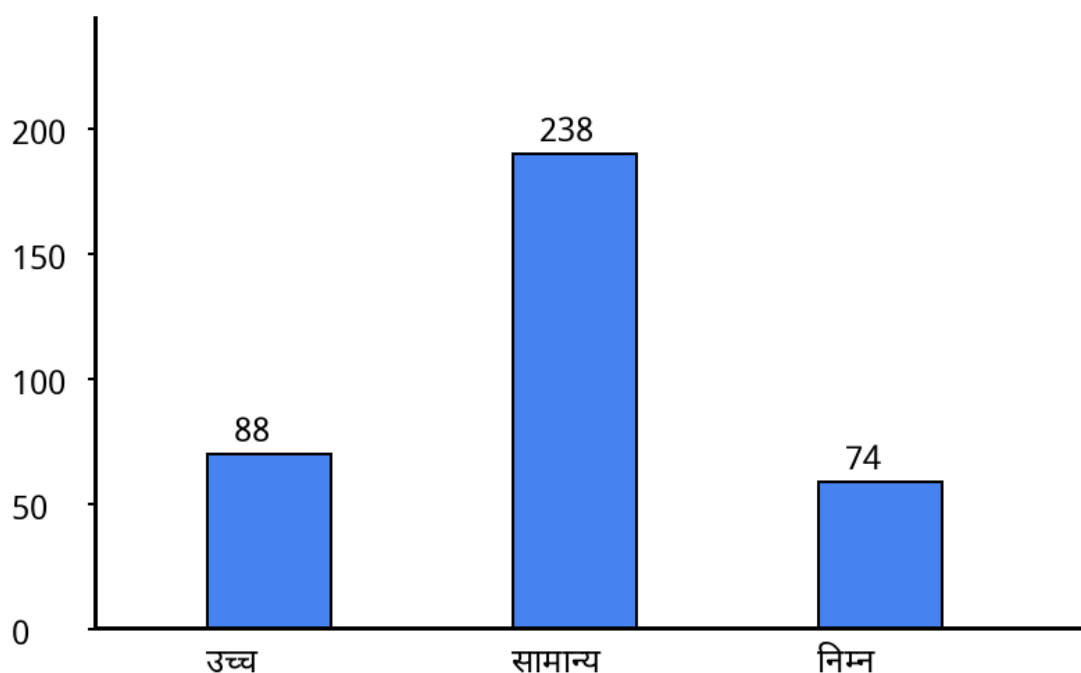
तालिका 1  
स्ववित्तपोषित बी०एड० प्रशिक्षुओं के मानसिक स्वास्थ्य का स्तर

| मानसिक स्वास्थ्य स्तर | आवृत्ति | प्रतिशत | संचयी प्रतिशत | टिप्पणी               |
|-----------------------|---------|---------|---------------|-----------------------|
| उच्च                  | 88      | 22.0    | 22.0          | उच्च मानसिक स्वास्थ्य |
| सामान्य               | 238     | 59.5    | 81.5          | अधिकांश प्रशिक्षु     |
| निम्न                 | 74      | 18.5    | 100.0         | कम संख्या             |

### व्याख्या :

तालिका से स्पष्ट है कि कुल 400 स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षुओं में से 238 (59.5%) प्रशिक्षुओं का मानसिक स्वास्थ्य सामान्य स्तर का पाया गया। 88 (22.0%) प्रशिक्षुओं का मानसिक स्वास्थ्य उच्च तथा 74 (18.5%) प्रशिक्षुओं का मानसिक स्वास्थ्य निम्न स्तर का पाया गया। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिकांश स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षुओं का मानसिक स्वास्थ्य सामान्य श्रेणी में है, अतः प्रस्तुत परिकल्पना समर्थित होती है।

स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षुओं का मानसिक स्वास्थ्य



### निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में “वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षुओं” के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह ज्ञात करना था कि दोनों प्रकार के बी.एड. प्रशिक्षुओं का मानसिक स्वास्थ्य सामान्य स्तर का है या नहीं। अध्ययन के लिए कुल “400 प्रशिक्षुओं” का चयन किया गया तथा उनके मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित आँकड़ों का विश्लेषण आवृत्ति, प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन एवं अन्य वर्णनात्मक सांख्यिकीय विधियों के आधार पर किया गया। प्राप्त परिणामों को सारणी एवं बार आरेखों के माध्यम से प्रस्तुत कर उनका विस्तृत विश्लेषण किया गया।

प्रथम परिकल्पना “स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षुओं का मानसिक स्वास्थ्य सामान्य है।” के परीक्षण से प्राप्त परिणामों से स्पष्ट हुआ कि अधिकांश वित्तपोषित प्रशिक्षु सामान्य मानसिक स्वास्थ्य श्रेणी में आते हैं। अध्ययन में सामान्य मानसिक स्वास्थ्य वाले प्रशिक्षुओं का प्रतिशत सर्वाधिक पाया गया, जबकि उच्च एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य श्रेणी में प्रशिक्षुओं की

संख्या अपेक्षाकृत कम रही। वर्णनात्मक सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त माध्य, माध्यिका एवं बहुलक के मानों में पर्याप्त समानता पाई गई, जिससे यह स्पष्ट होता है कि आँकड़ों का वितरण संतुलित एवं सामान्य था। साथ ही मानक विचलन अपेक्षाकृत कम होने से यह भी सिद्ध होता है कि प्रशिक्षुओं के मानसिक स्वास्थ्य में अत्यधिक असमानता नहीं थी। अतः यह निष्कर्ष निकाला गया कि वित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षुओं का मानसिक स्वास्थ्य सामान्य एवं संतोषजनक है और प्रथम परिकल्पना अध्ययन के प्राप्त आँकड़ों द्वारा समर्थित होती है।

द्वितीय परिकल्पना “स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षुओं का मानसिक स्वास्थ्य सामान्य है।” के परीक्षण से भी समान प्रकार के परिणाम प्राप्त हुए। अध्ययन में अधिकांश स्ववित्तपोषित प्रशिक्षु सामान्य मानसिक स्वास्थ्य श्रेणी में पाए गए। यद्यपि कुछ प्रशिक्षुओं का मानसिक स्वास्थ्य उच्च तथा कुछ का निम्न स्तर का पाया गया, तथापि उनकी संख्या सामान्य श्रेणी की तुलना में कम रही। मानसिक स्वास्थ्य के औसत स्कोर तथा प्रतिशत वितरण से यह स्पष्ट हुआ कि स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षुओं में भी मानसिक स्वास्थ्य का स्तर सामान्य एवं संतुलित है। प्राप्त बार आरेखों एवं सारणियों ने भी यह स्पष्ट किया कि सामान्य मानसिक स्वास्थ्य श्रेणी का प्रतिनिधित्व सर्वाधिक था, जिससे यह निष्कर्ष और अधिक सुदृढ़ होता है।

दोनों परिकल्पनाओं के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित दोनों प्रकार के बी.एड. प्रशिक्षुओं में मानसिक स्वास्थ्य का स्तर सामान्य पाया गया। दोनों समूहों के अधिकांश प्रशिक्षु मानसिक रूप से संतुलित, भावनात्मक रूप से स्थिर तथा सामाजिक एवं शैक्षिक परिस्थितियों के साथ समुचित समायोजन करने में सक्षम पाए गए। इससे यह भी संकेत मिलता है कि शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों का शैक्षिक वातावरण, प्रशिक्षण गतिविधियाँ, सह-पाठ्यक्रमीय कार्यक्रम तथा परामर्श संबंधी व्यवस्थाएँ प्रशिक्षुओं के मानसिक स्वास्थ्य को सकारात्मक बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अध्ययन के निष्कर्ष यह भी इंगित करते हैं कि मानसिक स्वास्थ्य शिक्षक-प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व विकास, आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता, समस्या समाधान, सामाजिक समायोजन तथा प्रभावी शिक्षण कौशल के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिन प्रशिक्षुओं का मानसिक स्वास्थ्य सामान्य पाया गया, उनमें शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, उत्तरदायित्व की भावना तथा व्यावसायिक दक्षता का स्तर भी अपेक्षाकृत बेहतर पाया गया। इसलिए शिक्षक शिक्षा संस्थानों को मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन से संबंधित गतिविधियों, योग एवं ध्यान, मनोवैज्ञानिक परामर्श, जीवन-कौशल शिक्षा तथा तनाव प्रबंधन कार्यक्रमों का नियमित आयोजन करना चाहिए, ताकि प्रशिक्षुओं का मानसिक स्वास्थ्य भविष्य में भी सुदृढ़ बना रहे। अतः दोनों परिकल्पनाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि “वित्तपोषित तथा स्ववित्तपोषित दोनों प्रकार के बी.एड. प्रशिक्षुओं का मानसिक स्वास्थ्य सामान्य एवं संतोषजनक है।” अध्ययन से प्राप्त आँकड़े दोनों परिकल्पनाओं का समर्थन करते हैं। इसलिए दोनों परिकल्पनाओं को “स्वीकार (।बबमचजमक)” किया जाता है। यह निष्कर्ष शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में मानसिक स्वास्थ्य के महत्व को रेखांकित करता है तथा भविष्य में शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों को और अधिक प्रभावी एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए उपयोगी आधार प्रदान करता है।

#### सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. अग्रवाल, जे. सी. (2018). शैक्षिक मनोविज्ञान। नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
2. शर्मा, आर. ए. (2019). शिक्षा अनुसंधान एवं सांख्यिकी। मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
3. चौहान, एस. एस. (2017). उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान। नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
4. सिंह, ए. के. (2018). मनोविज्ञान की रूपरेखा। नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
5. पाण्डेय, के. पी. (2016). शिक्षा मनोविज्ञान। वाराणसी: विनोद पुस्तक मंदिर।
6. यादव, आर. एस. (2021). मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व विकास। जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
7. गुप्ता, एस. पी. (2019). शिक्षा में अनुसंधान विधियाँ। इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।
8. श्रीवास्तव, डी. एन. (2022). शिक्षक शिक्षा एवं मानसिक स्वास्थ्य। नई दिल्ली: ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन।
9. वर्मा, एम. (2020). मानसिक स्वास्थ्य : सिद्धांत एवं व्यवहार। लखनऊ: भारतीय प्रकाशन।
10. भटनागर, आर. पी. (2018). आधुनिक शैक्षिक मनोविज्ञान। आगरा: आर. लाल बुक डिपो।

11. Best, J. W., & Kahn, J. V. (2016). Research in Education (10th ed.). Pearson Education.
12. Cohen, L., Manion, L., & Morrison, K. (2018). Research Methods in Education (8th ed.). Routledge.
13. Garrett, H. E. (2017). Statistics in Psychology and Education. Paragon International Publishers.
14. Mangal, S. K. (2019). Advanced Educational Psychology (3rd ed.). PHI Learning.
15. American Psychological Association. (2020). Publication Manual of the American Psychological Association (7th ed.). APA.
16. Corey, G. (2017). Theory and Practice of Counseling and Psychotherapy (10th ed.). Cengage Learning.
17. Woolfolk, A. (2019). Educational Psychology (14th ed.). Pearson.
18. Santrock, J. W. (2020). Educational Psychology (7th ed.). McGraw-Hill Education.
19. World Health Organization. (2022). World Mental Health Report: Transforming Mental Health for All. Geneva: World Health Organization.
20. NCERT. (2023). National Curriculum Framework for School Education. New Delhi: National Council of Educational Research and Training (NCERT).